क्या तकलीद लाज़िम है ?

ये बड़ा नाजुक मामला है कि इस्लाम मे शुरू के 400 साल तक तकलीद का नामो निशान नहीं था फिर अचानक 4 मज़हबो की बुनियाद पड़ गई और लोगो ने कहना शुरू किया कि चारो मज़हबो मे से 1 मज़हब की पैरवी फर्ज है । और मआज़अल्लाह लोग फर्ज का लफ्ज़ इस्तेमाल करने पर नही डरे और ना ये सोचा कि फर्ज तो किसी चीज़ को अल्लाह करता है और अगर तकलीद को फर्ज मान लिया जाये तो नाऊज़ुबिल्लाह अव्वल के मुसलमान जो साहबा रजि0 ताबईन रह0 ताबेअ ताबईन रह0 ताबेअ ताबेअ ताबईन रह0 से एक फर्ज छुट गया ।

इस मामले पर गौर व फिक्र की ज़रूरत है तो ये रिसाला इसलिये लिखा जा रहा है कि जो लोग तहकीक के कायल है वो इससे फायदा हासिल करे और अल्लाह के नाज़िल किये हुये इस्लाम पर उसके रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के तरीके पर चले और कामयाबी हासिल करे इन्शाअल्लाह ।

तकलीद के मायने

(1) लुगत से

गर्दन बंद गले मे डालना और किसी कि जिम्मेदारी पर काम करना और अपनी गरदन पर कोई काम ले लेना और माअनी मज़ाज़ी ये है कि किसी की ताबेदारी बगैर हकीकत मालूम किये करना । गले का पट्टा (अज़ ग्यास अल लुगत सफा 103)

(2) शरह से

तकलीद ये है कि जिस की बाबत मुल्ला अली कारी हनफी रह0 अपनी किताब शरह कसिदा अमाली मतबुआ युसुफी देहली सफा 34 मे लिखते है कि :-

तकलीद कुबूल करना कौल गैर का बगैर सबूत के, पस गोया कि इस मुक्कलिद ने बोझा कबुल कर लेना अपने इमाम के कौल को अपने गले का हार बना लेना ।

मगतनम अल हसूल मे फ़ाजिल कंधारी हनफी फरमाते है कि :-

तकलीद उस शख्स के कौल पर बिला दलील अमल करना है जिस का कौल शरई हुज्जतो मे से न हो सो रूजु करना आहंज़रत सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और इज्माअ की तरह तकलीद नहीं (मयारूल हक मतबुआ रहमानी सफा 37)

किसी के कौल को उस की दलील के जाने बगैर कुबूल करना तकलीद है ।

तकलीद कब से शुरू हुई

शाह वलीउल्लाह साहब हुज्जतुल बलाग मतबुआ सिद्दीकी बरेली सफा 157 मे फरमाते हे कि :–

यानि मालूम होना चाहिये कि चौथी सदी से पहले लोग किसी खालिस एक मजहब पर मुत्ताफिक न थे ।

अल्लामा अल मौकाईन मतबुआ अशरफ अल मताबअ देहली जिल्द अव्वल सफा 222 मे है :–

ये तकलीद की बिदअत चौथी सदी मे जारी हुई है ये वह ज़माना है कि जिस की मजम्मत रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से साबित हो चुकी है ।

अल्लामा सनद बिन अन्नान मालिकी तहरीर फरमाते है कि :–

और ये तकलीद एक बिदअत है जो (बाद के ज़माने मे) पैदा की गई इसलिये कि हम यकीनन जानते है कि सहाबा रजि0 के ज़माने मे किसी खास शख्स के नाम का मज़हब न था जिसको पढ़ा पढ़ाया जाता हो और इस कि तकलीद की जाती हो बल्कि वो लोग वाकई मे कुरआन व हदीस की तरफ रूजू करते थे और कुरआन व हदीस के न मिलने की सुरत मे जिस तरफ उन की बसीरत पहुंचती इसी तरह ताबईन रह0 करते रहे । यानी कुरआन व हदीस की तरफ रूजू करते अगर कुरआन व हदीस से न मिलता तो इज्माअ सहाबा की तरफ नज़र करते, अगर इज्माअ भी न मिलता तो खुद इज्तेहाद करते । और बाज़ सहाबी के कौल को कवी समझ कर इख्तेयार कर लेते फिर ताबेअ ताबईन का ज़माना आया इस ज़माने मे इमाम अबू हनीफा रह0, इमाम मलिक रह0 और इमाम शाफई रह0 और इमाम अहमद बिन हंबल रह0 हुए क्योकि इमाम मलिक रह0 ने 179 हि0 मे वफात पाई और इमाम अबू हनीफा रह0 ने 150 हि0 मे वफात पाई और इसी साल मे इमाम शाफई रह0 पैदा हुए और इमाम अहमद बिन हंबल 164 हि0 मे पैदा हुए ये चारो भी पहलो के तरीके पर थे इस के ज़माने मे भी किसी खास शख्स का मज़हब मुकर्रर न था । जिस का आपस मे दर्स देते हो । और इन्ही की तरह अमल के करीब करीब उन के इतबाअ का भी यही तर्जे अमल था । बहुत से इमाम मालिक रह0 ओर उन के हम पल्ला इमामा के कौल मे जिस मे इन्ही के शार्गिदो ने इख्तेलॉफ किया । अगर हम इन को नकल करे तो इस किताब का जो मकसद है वो रह जायेगा । इन शार्गिदो ने इस आजादी के साथ इख्तेलाफ इसी वास्ते किया कि वो इन के मुक्कलिद न थे । बल्कि अलात इज्तेहाद के जामेए थे और बहरहाल ताबेअ ताबईन के ज़माने मे तकलीद पैदा न हुई थी । और अल्लाह ने अपने नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को इन के इस कौल मे सच्चा कर दिया दिया कि बेहतर ज़मानो मे अहले ज़माना मेरे है फिर वो जो इन के बाद वाले है फिर जो इन के बाद वाले है, अपने ज़माने के बाद दो ज़मानो का जिक्र किया ये हदीस सहीह बुखारी मे है । पस अहले तकलीद से ताज्जुब है कि वो कैसे कहते है कि ये (तकलीद वाला

मज़हब) कदीम है और यही हम बुजुर्गो से देखते चले आए है । हालांकि वो हिजरत से 200 वरस बाद पैदा हुए । बाद गुजरने इन ज़मानो के जिन की रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने तारीफ की (अला राशिदा 38)

तकलीद की तरक्की

शाह वलीउल्लाह साहब हुज्जतुलाह अलबलाग मतबुआ सिद्दीकी बरेली सफा 151 मे फरमाते है कि :–

इमाम अबू हनीफा रह0 के शागिर्दो मे सब से ज्यादा शोहरत इमाम अबू यूसूफ रह0 की हुई हारून रशीद के अहद मे काज़ी का मनसब (ओहदा) उन को हासिल हुआ इस की वजह से इमाम अबू हनीफा रह0 का मजहब फैल गया और तमाम एतराफ इराक, खुरासन तक इस का कब्जा हो गया ।

तकलीद की मज़म्मत (विरोध)

कुरआन व तफसीर से

फरमाया अल्लाह पाक ने सुरह तौबा आयत नं0 31 मे

ठहराते है अपने आलिमो और दरवेशो को अल्लाह, अल्लाह को छोड़कर

इस आयत के तहत इमाम फखरूद्दीन राज़ी अपनी तफसीर कबीर मतबुआ इस्तम्बूल जिल्द चार सफा 623 मे फरमाते है :–

अक्सर मुफ्फसरीन कहते है कि अरबाब से ये मुराद नहीं कि यहूदी और अंसार ने अपने मौलवियों और दरवेशो को उन के खुदा होने का एतेकाद कर लिया था । बल्कि मुराद ये है कि उन्होने इतआत की थी अपने मौलवियो और दरवेशो की इस बात पर की उनके हलाल ठहराने को हलाल जाना और हराम ठहराने को हराम जाना ।

नकल किया गया है कि अदी बिन हातिम ताई नसरानी थे पस रसूलूल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास आए कि आप सुरत बरात की तिलावत फरमा रहे थे यहां तक इस आयत तक पहुंचे, कहां (अदी बिन हातिम ताई ने) मैने कहां हम उन के इबादत नहीं करते थे आहंजरत सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया नहीं हराम करते थे उस चीज को की जिसे अल्लाह ने हलाल किया है पस हराम जानते थे तुम भी उस को । और हलाल करते उस चीज को कि जिसे अल्लाह ने हराम किया है

पस तुम भी उसे हलाल जानते थे । कहां हां ऐसा ही होता था पस रसुलल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया यहीं उन की इबादत है ।

हदीस से

हज़रत जाबिर रजि0 से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रजि0 नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास तौरात का एक नुस्खा लाये पस कहा ऐ अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ये तौरात का नुस्खा है, पस चुप रहे अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम, पस पढ़ना शुरू किया और नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का चेहरा सुर्ख होने लगा तो हज़रत अबू बक्र रजि0 ने कहा उमर गुम करे तुझे तेरी मां, क्यां नहीं देखता तु उस चीज को रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के चेहरे पर है, पस हज़रत उमर रजि0 ने आहंजरत सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के चेहरे की तरफ देखकर फरमाया मै अल्लाह के साथ पनाह मांगता हू उस के गजब से और रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के गजब से । हम अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के नबी होने पर राज़ी हुए । फिर आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कसम है उस ज़ात कि जिस के हाथ मे मुहम्मद की जान है अगर मुसा तुम्हारे वास्ते ज़ाहिर होते और मुझें छोड़कर तुम उनकी पैरवी करते तो सीधी राह से भटक जाते और अगर होते मुसा जिन्दा और मेरी नबूवत पाते तो सिवाए मेरी पैरवी के उनके पास कोई चारा न होता ।(मिश्कात)

सहाबा रजि0, ताबईन रह0 व ताबेअ ताबईन रह0 से

मीज़ान शीरानी मतबुआ मिस्र जिल्द 1 सफा 47 मे है :–

हज़रत उमर रजि0 फरमाते थे कसम है उस ज़ात की जिस के कब्जे मे उमर की जान है नहीं कब्ज की अल्लाह ने अपने नबी की रूह और न उठाया उन से वही को यहां तक की बेपरवाह कर दिया अपनी उम्मत को राय से ।

मीज़ान शीरानी जिल्द 1 सफा 47 मे है कि :–

हज़रत उमर रजि0 जब कोई फतवा देते तो कहते कि ये उमर रजि0 की राय है अगर ठीक है तो अल्लाह की तरफ से समझो वरना खता हो तो उमर रजि0 की तरफ से ।

हुज्जतुल बलाग मतबुआ सिद्दीकी बरेली सफा 154 मे है कि :–

शरीह रह0 कहते है कि हज़रत उमर रजि0 ने मुझे खत लिखा इस मे ये था कि अगर कोई

मसला दरपेश हो और कुरआन मे हो तो इस से फैसला करना इस से लोग तुझे ने फेरे, अगर ऐसी चीज़ पेश आये जो कुरआन मे नहीं है तो इस का फैसला सुन्नत रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के मुताबिक करना, अगर कोई मसला ऐसा दरपेश हो जो न कुरआन मे हो न हदीसे रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मे हो तो अगर लोग किसी बात पर मुत्तफिक हो गये तो इस पर अमल करना । अगर ऐसा मामला दरपेश आये जो न कुरआन मे है न हदीस मे है न तुम से पहले इस मे किसी ने कहा है तो तुझे इख्तेयार है कि इन दो बातों मे से एक पंसद करे । एक ये कि इज्तेहाद कर के अपनी राय से फैसला करे दुसरे ये कि सुकूत करे और कोई फैसला न करे, मेरी राय मे तेरे वास्ते सुकूत बेहतर है ।

हुज्जातुल बलाग सफा 153 मे फरमाते है :–

हज़रत जाबिर बिन जैद रजि0 से अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 ने फरमाया कि तुम बसरा के फकीहो मे से हो इसलिये हमेशा फतवा कुरआन व हदीस के मवाफिक ही देना अगर ऐसा न करोगे तो खुद भी हलाक होगे और हलाक करोगे ।

मीज़ान शारानी जिल्द 1 सफा 47 मे है कि :–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 फरमाते थे तकलीद करे कोई मर्द किसी मर्द की अपने दीन मे (इस तरह) की अगर इमान लाये वो तो इमान लाये ये और अगर काफिर करे वो तो काफिर करे ये ।

अल्लामा अलमौकईन मतबुआ अशरफ अल मताबेए जिल्द 1 सफा 217 मे है

हज़रत इब्ने मसऊद रजि0 फरमाते है कि कोई शख्स दीन के बारे मे किसी की तकलीद न करे क्योकि अगर वो मोमिन रहा तो इसका मुकल्लिद भी मोमिन रहेगा और अगर वो काफिर हुआ तो इसका मुकल्लिद भी काफिर रहेगा । बस बुराई मे किसी की पैरवी नहीं ।

अल्लामा अल मौकईन जिल्द 1 सफा 94 मे है कि

शाअबी रह0 कहते थे कि कयास वालो के पास मत बैठो वरना तू हलाल को हराम और हराम को हलाल कर देगा ।

दारमी सफा 25 मे है कि

दाऊद बिन अबी हिन्द रह0 कहते है कि इब्ने सीरिन ने कहा की पहले जिस ने कयास किया वो शैतान है और सूरज और चांद की कयास ही से इबादत की गई है ।

मीज़ान जिल्द 1 सफा 48 मे है कि

मुजाहिद अपने शागिर्दो से कहते थे कि मेरी हर बात और हर फतवा मत लिखा करो सिर्फ हदीस रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम लिखने के कायल है शायद कि मै आज जिन चीजो का हुक्म देता हूं कल इस से रूजु कर लूं ।

तकलीद की मनाही इमामो के कौल से

फतावा इब्ने तैमिया मतबुआ मिस्र 406 मे है

चारो इमामो से साबित हो चुका है कि उन्होने ने लोगो को अपनी तकलीद से मना किया है । और यही हुक्म दिया है कि जब कोई बात उन को किताब व सुन्नत से मालूम हो जाये । जो उन के कौल से कवी तर हो तो इसी बात को ले जो किताब व सुन्नत से मालूम हुई हो और उन के कौलो को छोड़ दे ।

इमाम अबू हनीफा रहमाउल्लाह का कौल

शाह वली उल्लाह साहब फरमाते है :-

इमाम अबू हनीफा रह0 से किसी ने पूछा अगर आपने कुछ कहा और किताबुल्लाह इस के मुखालिफ हो, जवाब दिया कि मेरा कौल किताबुल्लाह के मुकाबले मे तर्क कर दो । इस ने फिर पूछा कि अगर रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की हदीस इस के खिलाफ हो तो जवाब दिया कि मेरा कौल रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के मुकाबले मे तर्क कर दो । इस ने फिर पूछा कहा अगर सहाबा रजि0 का कौल इस के मुखालिफ हो जवाब दिया कि मेरा कौल सहाबा रजि0 के मुकाबले मे तर्क कर दो ।

मीज़ान शीरानी मतबुआ मिस्र सफा 29 मे है कि :-

इमाम आज़म रह0 ने अपने इस कौल से इशारा किया है कि जो रसुलूल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से (मेरे मां बाप आप पर कुरबान) पहुंचे वो सर आंखो पर कुबूल है, और जो सहाबा रजि0 से पहुंचे इस मे से इन्तेखाब करेगे और जो सहाबा के सिवा ताबईन रह0 वगैरह से पहुंचे तो वो आदमी है और हम भी आदमी है ।

कलमात तैयबात मतबुआ मताला अलउलूम सफा 30 मे इमाम अबू हनीफा रह0 का कौल नकल फरमाते है कि :-

जब सहीह हदीस मिल जाये पस वही मेरा मज़हब है ।

मीज़ान सफा 49 मे है कि :-

इमाम अबू हनीफा रह0 फरमाते थे कि लोग हिदायत पर रहेगे जबतक कि उन मे हदीस के तलब करने वाले होगे जब हदीस को छोड़ कर और चीजे तलब करेगें तो बिगड़ जायेगे ।

ऐनी शरह हिदाया मतबुआ जिल्द 1 सफा 253 मे है कि :-

हदीसे मर्सल हमारे लिये हुज्जत है ।

दुर्रे मुख्तार शरह दुर्रे मुख्तार मतबुआ देहली जिल्द 1 सफा 51 मे है कि :-

इमाम अबू हनीफा रह0 फरमाया करते थे कि जईफ हदीस मुझ को ज्यादा महबूब है लोगो की राय से ।

अकीदा अल जैद सफा 70 मे है कि :-

इमाम अबू हनीफा रह0 कहते है कि जो शख्स मेरी दलील से वाकिफ न हो उस को लाईक नही कि मेरे कलाम का फतवा दे ।

मुकदमा हिदाया जिल्द 1 सफा 93 मे है कि :-

इमाम अबू हनीफा रह0 फरमाते है कि किसी को हलाल नहीं कि मेरे कौल को ये जबकि ये न जाने कि मैने कहां से कहा है, पस तकलीद से मुमानियत की और मार्फत दलील की जानिब तरगीब दी ।

मतबुआ फारूकी के सफा 4 मे है

इमाम अबू हनीफा रह0 फरमाया करते कि मेरी तकलीद मत करना और न मालिक रह0 की और न किसी और कि तकलीद करना और अहकाम को वहा से ले जहां से उन्होने लिये है किताब व सुन्नत से ।

इमाम मलिक रह0 का कौल

जलबू अल मनफआता सफा 74 मे है कि :-

मै भी एक आदमी हू कभी मेरी राय सही और कभी गलत होती है, अब तुम मेरी राय को देख लो जो किताब व सुन्नत के मुवाफिक हो इस को ले लो और जो मुखालिफ हो उसको छोड़ दो ।

तारीख इब्ने खलकान मतबुआ इरान जिल्द 2 सफा 11 मे है कि :-

हाफिज़ हमीद ने हकायत की है कि कानबी ने बयान किया कि मै इमाम मालिक रह0 के मर्ज मौत मे उन के पास गया और सलाम कर के बैठा तो देखा उन को रोते हुए । मैने कहा आप क्यो रोते है फरमाया ऐ काअनबी मै क्यो न रोऊ मुझ से बढ़ कर रोने के काबिल कौन है मै ने जिस जिस मसले मे राय से फतवा दिया, मुझे ये अच्छा मालूम होता है कि उन हर मसले के बदले कोड़े से मै मार खाता, मुझको इसमे गुजांईश थी काश मैं राय से फतवा न देता ।

इमाम शाफाई रह0 का कौल

अकदाल जैद सफा 54 मे है कि :-

इमाम शाफाई रह0 फरमाते है जब मैं कोई मसला कहूं और नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मेरे कौल के खिलाफ फरमाया हो तो, जो मसला नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की हदीस से साबित हो वह अव्वल है, पस मेरी तकलीद मत करना ।

सफा 80 मे है :-

इमाम शाफाइ रह0 से रिवायत है वह फरमाया करते थे जब सहीह हदीस मिल जाये पस वही मेरा मज़हब है । और एक रिवायत मे है कि जब मेरे कलाम को देखो कि हदीस के मुखालिफ है तो हदीस पर अमल करो । **और मेरे कलाम को दीवार पर दे मारो ।** और एक दिन मजनी से कहा कि ऐ इब्राहिम हर एक बात मे मेरी तकलीद न करना और इस से अपनी जान पर रहम करना, क्योकि ये दीन है, और नीज़ इमाम शाफाई रह0 फरमाया करते थे कि किसी के कौल मे हुज्जत नहीं है सिवाए रसुल अल्लाह सल्लाल्लहू अलैहि वसल्लम के । **अगरचे कहने वाले कसरत से हो,** और न किसी कयास मे, और न किसी शै मे, यहां बात अल्लाह और उसके रसुल के तसलीम करने के और कुछ नहीं है ।

नज़ुरातूलहक मतबुआ बलगार सफा 26 मे अल्लामा मरजानी हनफी फरमाते है कि :-

इमाम शाफाई रह0 ने फरमाया कि सब मुसलमानो ने इत्तेफाक किया है कि आहंजरत सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की हदीस किसी के कौल से न छोड़ी जाये ।

हुज्जतुल बलाग मतबुआ सिद्दीकी सफा 153 मे है कि :-

इमाम शाफाई रह0 ने इमाम अहमद रह0 से कहा कि सही हदीस का इल्म तुम हो हम से ज्यादा है, जो हदीस सहीह हुआ करे वह मुझे बता दिया करो ताकि मै इसी को अपना मज़हब करार दूं।

अल्लामा मौकाईन जिल्द 1 सफा 219 मे है कि :-

मज़रनी कहते है कि इमाम शाफाई रह0 ने अपनी और दूसरो की तकलीद से मना किया है ताकि इस मे गौर करे और अपने वास्तें बचाव का रास्ता तलाश करे।

इमाम अहमद बिन हंबल रह0 का कौल

अकदाल जैद मतबुआ सिद्दीकी लाहौर सफा 81 मे है कि :-

इमाम अहमद रह0 फरमाया करते थे कि किसी को अल्लाह और उसके रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ कलाम की गुजांईश नहीं है।

मीज़ान शाअरानी मे मतबुआ मिस्र जिल्द 1 सफा 51 मे है कि :-

इमाम अहमद बिन हंबल रह0 के बेटै अब्दुल्लाह कहते है कि मैने अपने बाप अहमद बिन हंबल रह0 से दरयाफ्त किया कि एक शहर ऐसा है जहां एक मुहद्दीस है जो सहीह, जईफ हदीस का इल्म नहीं रखता और एक सहाब-बुल-राय यानि फकीह है अब आप फरमाईये कि किस से फतवा पूछे तो कहा सहाबुल हदीस से पूछो, सहाबुल राय से न पूछो।

मीज़ान शाअरानी मतबुआ मिस्र जिल्द 1 सफा 10 मे है कि :-

इमाम अहमद बिन हंबल रह0 फरमाते थे कि अपना इल्म इसी जगह से लो जहां से इमाम लेते है। और तकलीद पर कनाअत न करो क्योकि ये अंधापन है समझे।

अकदाल जैद मतबुआ सिद्दीकी लाहौर सफा 81 मे है कि :-

और फरमाया करते थे कि मेरी तकलीद न करना और न मालिक की और न औजाई की और न किसी और कि तकलीद करना और अहकाम को वहां से ले जहां से उन्होने ने लिये है। किताब व सुन्नत से।

इस तरह हर दौर के बुजुर्गो ने इस उम्मत पर आने वाली ताबाही को पहले ही भांप लिया था और वक्त ब वक्त इससे आगाह करते रहे मगर अफसोस उम्मत गहरी गुमराहियों मे गुम हो गयी और

उसे गुमराही को ही हक समझ बैठी और जो लोग ऐन कुरआन व सुन्नत के पांबद है या पांबदी की कोशिश करते है उन्हे बदमज़हब का खिताब दे डाला ।

अल्लाह फरमाता है सुरह माइदा आयत 44 मे :-

व मल्लम यहकुम बिमा अन्जलल्लाहू फउलाइक हुमुल काफिरून

और जो कुरआन (व हदीस की दलील) से फैसला न करे वह काफिर है ।

इमाम अबू हनीफा रह0 के इन्तेकाल के 278 साल के बाद 428 हिजरी मे उनकी तरफ मंसूब करके पहली किताब कुदुरी लिखी गई, फिर 573 हिजरी मे हिदाया लिखी गई जिसे कुरआन के मान्निद कहा गया नाऊजुब्बिलाह और इसमे ढेरो मनगंठत मसले इमाम साहब की तरफ मंसूब कर दिये गये । और धीरे धीरे लोग इस मज़हब पर एक के बाद एक जमा होते गए और हिन्दुस्तान मे इस मज़हब की बुनियाद पड़ गई और अब तो हनफी मसलक के भी पचासो टुकड़े हो गये ।

बैतुल्लाह मे चार मुसल्ले

चौथी सदी मे तकलीद निकली फिर तकलीदी मज़हब पैदा हुए फिर इनकी आपस मे सर फुटव्वल शुरू हुई । हनफी व शाफाई का मतभेद इतना बढ़ा कि एक दूसरे के पीछे नमाज़ न पढ़ते थे यहां तक कि 665 हि0 मे मिस्र में चारो मज़हबो के चार काज़ी मुसल्लत किए गए । शाफाई, मालिकी, हंबली और हनफी इसके बाद सुलतान फ़र्रह बिन बरकूक जो अशेर समलूम चराकसा कहा जाता था नवीं सदी के शुरू मे बैतुल्लाह के अंदर चार मुसल्ले बना डाले । हालत यह हो गयी कि एक इमाम जमाअत करा रहा है तो तीन मुसल्लो पर नमाज़ी बैठे हुए है एक दूसरे के पीछे नहीं पढ़ते ।

वत्तखिजु म्मिमकामि इब्राहिम व मुसल्ला की मिसाल को तकलीदी मज़हब ने पारा पारा कर दिया था । सुलतान इब्ने मसऊद रह0 की कब्र को अल्लाह नूर से भरे कि जब अल्लाह ने उसे हिजाज का बादशाह बनाया तो उसने 1343 हिजरी मे बैतुल्लाह से इस बिदअत को मिटा दिया और चारो मुसल्लो को ढहा दिया और अल्हम्दोलिल्लाह अब एक ही मुसल्ले पर नमाज़ होती है । अल्लाह से दुआ है कि जिस तरह उसने चार मुसल्लो को हरम से ढहा दिया उस तरह इन चारो मज़हबो को भी ढहा दे और सिर्फ कुरआन व सुन्नत पर लोगो को जमा कर दे । आमीन या रब्बुल आलेमीन ।

चुनांचे फरमाने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम है :–

हज़रत अबू हुरैरह रजि0 रिवायत करते हुए कहते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :– मेरी उम्मत एक ज़माने तक तो कुरआन व सुन्नत पर अमल करती रहेगी इसके बाद उम्मती, उम्मतियों की राय पर चलने लगेगी जब राय पर चलेगी तो गुमराह हो जायेगी (इब्ने कसीर)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रिवायत करते हुए कहते है कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत पर ज़माना आएगा जैसे ज़माना आया बनी इस्राईल पर बराबर पापोश के साथ पापोश (यानि बनी इस्राईल की सख्त आज़माइश का ज़माना) यहां तक अगर उनमे से कोई आता था अपनी (सौतेली) मां के पास खुले तौर पर (हराम कारी के लिए) अलबत्ता होगा मेरी उम्मत मे भी ऐसा आदमी जो कहेगा यह (हां हां) बेशक बनी इस्राईल बंट गए और तेहत्तर गुटो के सारे जहन्नम मे जाएंगे केवल एक गिरोह के, सहाबा ने पूछा वह गिरोह कौन सा होगा आपने फरमाया ''मा अताअलयहि व असहाबि'' यानि 'जिस पर आज मैं और मेरे सहाबा है' । (मुसनद अहमद)

अब इस हदीस पर गौर करे और ईमानदारी से बताईये कि आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने जो ये मुबारक अल्फाज कहे उस वक्त उस मजलिस मे कितने शाफाई कितने हंबली कितने मालिकी और कितने हन्फी मौजूद थे । अफसोस वहां इन फिरको मे का कोई शख्स मौजूद नहीं था, बल्कि इन मजहबो के बानियों के वालिद भी अपने वालिद की पुश्त मे नहीं आए थे । सिर्फ सहाबा किराम की जमात थी जो दीन या तो कुरआन से लेती थी या फिर मुहम्मदूर्रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के फरमान से लेती थी, इसका मतलब जो दीन यहां से लेगा वही निजात पानी वाली जमात मे शरीक होगा ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर

रायपुर छ0ग0

CONTACT

ISLAMIC DAWAH CENTER
RAIPUR
QAZI ADNAN AHMED
9009911122
WWW.FACEBOOK.COM/IDCRAIPUR